

DPN 6233

Title : कर्माचर्चन विधि KARMMĀRCCAN VIDHI

Run. No. 6924

Cat. No. 45

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 28.7 x 11

Folios 24 Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor श्रीभवानीशङ्करशर्मा / राजेन्द्रश्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 835

Ruler / place ईश्वर भवानी शङ्कर शर्मा /

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : मन्त्र श्रुतिश्रुति राजेन्द्रश्रेष्ठ

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Mantra monogram included

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

१ अन्तः श्री भवानी ॥ गुरु नमस्तुते ॥ सूर्यार्चन ॥ ... ॐ अर्चन ॥ अस्तु
श्री ३ कुब्जिका देवी सगणाय कृष्णवर्णाय नमः ॥

समाप्ति / ^{Post-}colophon

इति कर्म्मार्चन विधिः समाप्तः ॥ ॥ सं. ८३५ ज्येष्ठ शुक्लैकादश्यां श्रीमन्मनी शङ्कर
शर्माणा लिखितमिदं पुस्तकं स्वार्थेन ॥

४ अस्मत् १

अस्मत् २

ॐ अथादि ॥ श्री ३ कृत्ति कादवी सगदा वत्र द कृष्ण च रु द शी यूजा कर्तुं श्री कूलमार्क दुया र्था नमः ॥ ॐ अत्रिती सर्व
 यर्ष्य २ ॥ यष्य राजनी ॥ श्री कृत्ति काथे नमः ॥ ॐ अरव दुम दुला काली ॥ सिद्धि वमु ॥ श्री ३ कृत्ति कादवी सगदा वत्र द कृ
 ष्ण च रु द शी यूजा निमित्ति यर्थ कम दु लू यष्य राजनी नमः स्तुतामि ॥ ॐ गुत्र मूर्त्त य यष्य राजनी समर्प्य यामि ॥ गुत्र द
 ॥ ॐ अथादि ॥ श्री ३ कृत्ति कादवी सगदा वत्र द कृष्ण च रु द शी यूजा कर्तुं श्री कूलमार्क दुया र्था नमः ॥ ॐ अत्रिती सर्व का
 र्या कूलमार्क दुया य यर्ष्य २ ॥ यष्य राजनी स्पृष्टा ॥ ॐ अमात्र का विन शासन रु व नमिता ॥ सिद्धि वमु ॥ श्री कृत्ति कादवी
 सगदा वत्र द कृष्ण च रु द शी यूजा कर्तुं कम दु लू यष्य राजनी नमः स्तुतामि ॥ ॥ २ कलिकलूष कृतान्क श्व दु मार्क दु री
 भा ॥ वज्र सकल कला विह्वल सो रथा र्थि दाता ॥ विदिव र्त्त ले म नू नां त्वां ज नै ता य रु का कृष्ण मज्जल रु ला र्थे स्त्वां क
 ला कर्त्तु नमामि ॥ श्री कूलमार्क दुया र्था नमः ४ यर्ष्य नमः ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कर्म

三

0 cms.

5

10

15

20

25

3

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]

किं संपूष्य नैव धीर्विविधैर्मत्स्यमांससवादि किं संपाष्यं निवदयन् आवाहनादि ॥ मण्डल ऊ
 र्प ॥ ॐ नै सिद्धि नाथाय विद्महे मित्र नाथाय धीमहि । न नो लक्ष्मी पथो दयाते ॥ स्तुति प ॥ ॐ
 श्रुत्वा मण्डला कालं श्राप्य नवरात्रं । तत्पदं दर्शितं यत्नं तस्मै श्रीगुरुव नमः ॥ १ ॥ अकथं
 मधुन त्वं वाङ्मनातीतं गवरी । तं तत्त्वं यत्नं संपापं तस्मै श्रीगुरुव नमः ॥ २ ॥ अज्ञान निमिग
 धस्य ज्ञानां न गलकया । वक्षुन्मीलितं यत्नं तस्मै श्रीगुरुव नमः ॥ ३ ॥ अनादि धात्रे सा
 ने श्राधिविधं सद्गवो नमः श्रीनाथवे श्राय ज्ञानोषधिविधायिन ॥ ४ ॥ पूजा कथाति यादी क्ता
 दयं कत्वा मत्तु र्यं । अकथं ज्ञानं सर्वं हि तस्मै श्रीगुरुव नमः ॥ ५ ॥ ज्ञानं किं समाचरं तत्त्वमा
 ला विरुषितं । कुकि मूकियदातारं गुरुं वन्दयथा गिरि ॥ ६ ॥ गुरुं नमस्कृत्यैव यथा श्रुतं
 गतं ॥ ७ ॥ अथ यिकमं गच्छेत् विमुक्तोत्मानमाप्स्यते ॥ ८ ॥ गुरुं नमस्कृत्यैव यथा श्रुतं

महेश्वर ४। गुणवत्तुवाङ्गत्सर्वं तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ २ ॥ पादुकां सयुमादन जायतवृद्धिं नृकमातरं
कार्त्तव्यं नित्यं तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ ३ ॥ यत्तु सर्वं समुत्पन्नं यत्तु सर्वं कथं गतं यस्मिन् पुनरिच्छि
तं सर्वं तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ ४ ॥ आरूपमादं कुरुमं यन्न सिद्धात्तुवा म्यदं । नाम गुरुं लोकात्वा
मी आशीर्वादं ददातुमं ॥ ५ ॥ अखण्डमण्डलाकारं धारयन् नरं शुक्लं । अवलम्बुसमास्थानं
अवलम्बय वस्तिनं ॥ ६ ॥ नित्यं दानं नित्यं रुक्मिण्युक्ताय कं । परमायदं गार्ग्यं यनाः
दन्ति त्वं मयुगा ॥ ७ ॥ अरुणश्चादि ॥ ८ ॥ नित्यं गुणमण्डलाच्च न समार्थं ॥ ९ ॥ नरं कर्मार्चनं का
न्यथा ॥ न्यासः ॥ १० ॥ ॐ नैऋतीं शुक्लं सौ कालिकालि मरुतकालि । मांसं गन्धिराजिनि । ॐ नैऋतीं
ॐ नैऋतीं शुक्लं मरुतकालि । मांसं गन्धिराजिनि । ॐ नैऋतीं शुक्लं मरुतकालि । मांसं गन्धिराजिनि । ॐ नैऋतीं
वकिं इत्युक्तं अलिनि वधि न मांसं रुक्मिण्युक्ताय कं । परमायदं गार्ग्यं यनाः

नाथया वर

२मः ॥ उं नै ज अं गी आदि नाथ गी ह आवा वा इ का ए ऊ या मि ३ ॥

य ऊ या मि ॥ हा व वा म ॥ उं नै जं न मा वि का पा ॥ ५ ॥ हा व द क्षि वा ॥ उं नै जं का काला न ल य का वा ॥ ५ ॥
 उं नै जं ग ल प न य पा ५ ॥ उं नै जं व द का य पा ५ ॥ उं नै जं म हा का ला य नं पा ५ ॥ आ वा द
 ना दि ॥ ॥ न ति क य पू जा ॥ ॥ न न उ क य पू य ॥ उं नै ज आ दि सि द्ध त्व ४ ग कि सि द्ध त्वा न व सि द्ध त्व ४ ग
 कि सि द्ध त्वा द्वि पं वा नी ति ना थ सि द्ध त्व ४ ग कि सि द्ध त्व त्वा नी ति ना थ सि द्ध त्व ४ ग कि सि द्ध त्व ४ ग
 अ न न ल क का टि सि द्वा ना पा दा मि त्र पा ५ ॥ स वा का य न रं स म्भ र्म म उ लं य त्रि ग म्भ द व द वी म
 र्य स स री रं नि षा य स र्म म उ ल आ स रं क ल्य थ न तथा ४ स्था प य न ॥ उं या सा य न य ना द वी
 ख ग नी ख ग रू पि नी ॥ स र्य सा क ग रं न म्भ आ ग रू रू म उ ल ॥ उं नै ज व न र २ रू म उ लं आ
 ग रू २ न भान म ४ नै स्वा हा ॥ ॥ न ग ४ ष द्वा नै म र्म य न ॥ उं नै ज ष द्वा नै म र्म य नै म का ग म ॥
 न क य म्भ आ स ना सी न वं व नू ल स न वं व क य ना स नो य वं कौ रू गी कौ नै पा ५ ॥ म उ

॥ न ति क य पू जा ॥ ॥ न न ४ क म म उ लं ॥

व द र्क पं च र्क ष द्दं व द र्क पं च र्क व द र्क अ र्वा वि ग क म ले व ५ अं य न्नी म द न्व री ॥ १ ॥
 ल ति का ल म ॥ ग नी र आ धा व ५ उं ॥ उं नै ज न्मा गी डा डिया न म हा यी ॥ १० गी डा ड न्व र न
 न ना थ गी डा या वा क्ति ज पा ५ ॥ म उ लं ग नी र ल ति ॥ उं ज न्मा गी डा ला न्व र म हा यी
 १० गी डा ला न्व र न्व र न न ना थ गी डा ला वा क्ति ज पा ५ ॥ म उ लं रू क रं ग नी र द द य ॥
 उं ज न्मा गी दू र्ग नि वि म हा यी ॥ १० गी दू र्ग न्व र न न ना थ गी दू र्ग वा क्ति ज पा ५ ॥ म उ
 लं ग नी र ना सि का ॥ उं ज न्मा गी का म रू म हा यी ॥ १० गी का म न्व र न न ना थ गी का
 मा वा क्ति ज पा ५ ॥ म उ लं दू र्ग रू ग नी र न नी य न रं ॥ ॥ न ति यी ० व द र्क आ वा द ना
 दि ॥ ॥ ॥ ष द्वा नै म र्म य ना स ना सी न यै वा या स न यं वा य वं वि षू
 पु ना स ना य वं कौ ज पा ५ ॥ म उ लं वा य य का ल स्य प म्भ रं ग नी र स्वा धि स्था न ली ग ॥ उं
 उं ज ग ल व ल ला क ला ग म मि नी व द ४ ष षी ल क का टि या नि नी गी ग ग ल न न ना थ गी

लू ग १ उं नै ज

दक्षिण

३॥

१०

गगनवक्त्रिजपाय ॥ मल्लयस्थिमगरीयनालो ॥ उं नै जं सुखलाकवत्तरागगमिनीदाह
गल्लककाटियागिनीगीस्वर्गनन्दनाथगीस्वर्गवक्त्रिजपाय ॥ मल्लोक्तमगरीयदक्षिण
पाय ॥ उं नै जं सुखलाकवत्तरागगमिनीदाहगल्लककाटियागिनीगीयवत्तरागगमिनी
वत्तरागगमिनीजपाय ॥ मल्लदक्षिणगरीयवामपाय ॥ उं नै जं सुखलाकवत्तरागगमिनी
ककाटियागिनीगीमल्यानन्दनाथगीमल्यावक्त्रिजपाय ॥ मल्लयपूर्वगरीयदक्षिण ॥ उं नै जं नै
गलाकवत्तरागगमिनीचतुर्लककाटियागिनीगीनागनन्दनाथगीनागवक्त्रिजपाय ॥ मल्लम
ध्यगरीयक ॥ ॥ गिनत्तपुष्करं ॥ आवाहनादि ॥ ॥ षष्ठावस्थ ॥ गानकानेम ॥ अत्रकपद्रासनासी
ना ॥ उं नै जं ॥ गानासननैवूदयनासनाय नैवू ॥ जपाय ॥ मल्लगानकानेम ॥ अत्रगरीय
वाधिल्लनति ॥ उं नै जं ॥ गीजमव्वानन्दनाथगीजकिनीवक्त्रिजपाय ॥ मल्लयस्थि

वडुर्कपंचकंषट्कं वडुर्कपंचकं वडुः। मूलाविंशकुमारेवः शुद्धिकीर्त्तनमा म्याहं । ३

[illegible]

[illegible]

73

५ ॐ ३

४३३

ॐ ३ ॐ २

[illegible]

78

[illegible]

ॐ

五所

[illegible]

१७

[illegible]

۷۹

٥٣

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गोदवीकाटमहाक्षरं ॐ ॐ ॐ सदा वमहाक्षरं ववायमहाक्षरं श्रीगणेशाय नमः ॥ उं गी व व
दूकाय पा य ॥ उं गी कं कं गुयालाय पा य ॥ उं गी नं आदिनाथ गुत्रं पा य ॥ आवाहनादि ॥ ॥ नगको
मारीय जा ॥ उं नं वं कं ॐ ॐ ॐ मदाको मारी मूर्ति य पा य ॥ उं नं कं कं कं कं कं कं मारी मूर्ति य
पा य ॥ कं कं दया य नमः ॥ कं गि व स स्वाहा ॥ कं गि खो ये वीषट् ॥ कं क व वा ॥ यं ॥ कं नं न
याय वषट् ॥ कं श्रुमा य रुट् ॥ मूलमनुः ॥ नं दि य पा गाय पा य ॥ आवाहनादि ॥ ॥ नं को मारी
य जा ॥ ॥ नग ॥ कं वलि य जा ॥ उं नं ग व य त्यास नाय पा य ॥ उं नं व द का स नाय पा य ॥
उं नं ॥ उं नं कं कं गुयाला स नाय पा य ॥ यं यि म ॥ उं ये या गि न्या स नाय पा य ॥ पूर्व ॥ उं नं स
व पी ॥ भ य पी ॥ भ नि ॥ द गाय द ग म व वा ॥ क गाय कं गु स दा दा ॥ सर्व दिग्ग ग सं क्लि ता ॥ ॥ या गि
नी या ग वी वं नु ॥ सर्व न ग स मा ग ता ॥ ॥ दं य व म या व कं ॥ गी ना ॥ थ व व द म म ॥ ॥ य रु का ॥ स

दक्षिण ५

स नं द वि ॥ उं नं पा दा र्च न व ता ॥ सर्व सिद्धि पु ग्ग द म द वि न र्घी र वं स दा ॥ ३ ॥ वी ग ली या गि नी ना क्ख य
दि ष कि म ही त न ॥ न द का र व लि द वि ॥ स म या वा व म ल कं ॥ ४ ॥ गु ति स्म ति म न ॥ दू र्घि ॥ मी स म दा क्लि
जी वि र्ग ॥ नि र्दं न य नु दू र्घा नां ॥ या गि नी ग व सं क्लि ता ॥ ५ ॥ कं क का दि क स व्ना दि ॥ इ न्नि मि क्ता नि रा वि
ता न ॥ नि र्दं न य नु दू र्घा नां ॥ या गि नी ग व सं क्लि ता ॥ ६ ॥ उं का ना दि षू य पी ॥ भ ॥ मु य ॥ सा ग ॥ य की र्गि
ता ॥ उं ष धी धा नु स दा दा ॥ दि ग्ग स वि दि ग्ग स व ॥ ७ ॥ म हा पा त ल व क्का ॥ ८ ॥ सर्व क्ता ना क व व वा
या गि नी या ग य क्ता त्मा ॥ स म य नि ष नु सा ध का ॥ ९ ॥ वी व क र्म स वी वं नु ॥ सर्व नि ष नु द व ता ॥
सि द्धा न्ध पू र्ण का वा य ॥ सा ध का ॥ क्लि ति ग्ग यि न ॥ १० ॥ न ग रं वा थ ग्ग म वा ॥ शू र था वा स वि द्ध व ॥
वा पी कू ये क व क्क वा ॥ म ग्ग न मा ग्ग म ॥ ११ ॥ ना ना त्र य ध ना न्ध यि ॥ व ट् जा वि वि धा नि व ॥ न स
व पि य स नु द ॥ व लि ग्ग क नु स व न ॥ १२ ॥ ग व ल ग ता र्दं न वी ॥ सर्व म न क ल प द ॥ पाल र्च य न्म या क

यथा मे नृपतिनाथगिरिस्त्रिमूर्तिमानयथा. किमादकं गुत्रवर्षं सततं नमामि ॥ त्रिगुह्य ॥ ४ ॥ ॥ यस्तु यसानिनि
 सरुमुसमानवर्षा. सैतिष्ठतं कृतिसर्पकजवकुम (ध्या) । सानन्दते प्रवनवात्मक कृद्विकंग. तस्मै नमामु
 उत्रवंसतर्गनिवाय ॥ उत्रमलुत ॥ ५ ॥ ॥ वत्तोषधीसकलतीर्थजस्तनयू. स्वकृपयत्नवसू (गकि
 तपूष्यमाली) यस्तुष्याग्रविषयमूनिरिधुगस्तं. तं कृमूस्त्रिगिवगकियूतं नमामि ॥ कलग ॥ ६ ॥ ॥
 नित्यं नमामि गुत्रयं किंग ॥ ८ ॥ समस्त. दिशो घसिद्धि सकलानपि मानवाद्याः ॥ यथा स कृत्तवर्षकजवकु २०
 यस्तु. संपाद्य तं तिदिनिमलुतर्नष्टलक्ष्मी ॥ ८ ॥ ॥ उत्रयकि ॥ १ ॥ ॥ संपाद्य तं विषमाहि विदुषजनाः स
 जीवनाय रुवर्षय विवृत्ति संतु । संप्लषनामगगि (गखवददयन्ति वत्सत्वमायनिदसंदनिसंददासि ॥
 उषधी ॥ ८ ॥ ॥ दीक्षाविलासिकिललालसवधवत्या. त्वं वदिर्नपुथमगगि विराजयूगा । नी (कृकटाकन
 वयावमदकमकु. रामाववपथूतगगि तिकठनाथ ॥ १ ॥ ॥ ॥ दीसस्त्रिगासनकमलुत

साकसूर्य वत्नाकमाङ्गलिनककुलमावदन्ती। याकांवनारुद्रकङ्गनिर्विगलारावाक्कीकवाडु
ममसाधुममदलाय॥वक्रायणी॥१०॥ ॥वसुधैवकुर्वतममलशुभाङ्गकिञ्चिदुल
गजि।गर्वेजटाकजाया।ननुययविदधतीवृषरुक्किताया।मादुश्वरीरुवडुसाधुममदलाय॥
मादुश्वरी॥११॥ ॥सिंहवर्णसदृशश्रुतिमावदन्ती।विश्रुत्यकाङ्क्षयतिमासगर्भदेधाना।मा
श्रुतिकासनसमास्तिनवालत्रयी।कोमाविकारुवडुममदलाय॥कोमावी॥१२॥ ॥गत्र
त्मनीश्रुतिनिरागत्रुतासनस्त्रु।मृद्धिन्नयद्वज्रमूर्खीनवयोवनाद्या।गंखासिचक्रगदयाकि
नवात्रुदस्तां।श्रीवेषूवीगत्रगतास्मिसदापुसन्तां॥वेषूवी॥१३॥ ॥उत्कूलकिंशुकदलाधिक
वक्रकार्त्तिकं।धारातिधाराकठिनान्नतकाववक्रां।मीनासिपाशवलयांकिनवात्रुदस्तां।वागादिकौ
महिषयानगर्भानमामि॥वागादी॥१४॥ ॥वृणस्यजीवदवर्णनमूचश्वरुन्ती।नृणात्वनेदृश

20

अ
म

गतेऽपि गिरुमानां निरावतासनगतां ध्वजवज्रहस्ता मेदीनमामिमूनि किन्नवदववन्ध्या ॥ १७ ॥
 लुपयनी ॥ १७ ॥ ॥ युगस्तिता नवकलंककया लमाला खदादुतिष्ठिमकया लसककिरुका ॥
 ह्यकनालवदनाजगदकधागी वामुदिकारुवहुमंशुरुमंगलाय ॥ वामुदु ॥ १८ ॥ ॥ सो
 न्यसात्रवृत्रिगंकमलायताक्षी पीनसुनीललितहावसृणा रुनाद्या ॥ खड्गजिह्वलववदाह
 ययातिनूपा लक्ष्मीनमामिमरुगी मरुनीयनूपा ॥ मरुलक्ष्मी ॥ १९ ॥ ॥ वहुवमूउमतिदू
 र्जयवकवीर्ज हत्वा निशुम्भनववह्निशुम्भनृ ॥ हन्तिस्मवषुदहनाविमलाकनाय सामधि
 यंददुगुविनाशनीया ॥ रुगवती ॥ २० ॥ ॥ उरुद्वीनसुनसारितहावमाला यधस्तिता
 रुयकवाववदाजिनता वन्धूकवर्णसदृशववधावयनी वागीश्वरी हनहुमंकटकुकाभ ॥
 वागीश्वरी ॥ २१ ॥ ॥ मध्याग्रीगानवस्त्रा मदिनतसूमुखी वज्रयधसूदीका वक्राक्षदृष्टयण

२१

स्त्रि

स्त्रयदिकयुलवशीपयागादिङ्गायुकाष्टाविंशका धवगषससदिनवज्रहृदुल्लेगी साद्राद्यार्जि
 गवर्णकमयदनूगतायादुनिर्त्यकमोघ ॥ २० ॥ याका (०) मात्राकाचदुर्युगसदितावक्रकस्त्राक
 वंरी ॥ २१ ॥ गवक्षागसंस्त्रातदनूपविगतावाग्निका (०) वहुध्वा यामयक्षसमतावयनिचवगताया
 वहुष्कावृताक्षी साष्टाविंशतिरुदंकुमकुलसदितायादुद्यार्जिगवर्ण ॥ २१ ॥ मध्याग्रीकागवक्षाग
 तिवस्तिर्गव तदायमषुदलपंकजमष्टर्णी द्वात्रयदुर्हिसदिनतिक्रज्ज्वरीर्ण नैवकुमकुल
 मर्दणयंग्रियामि ॥ कुमया ॥ २२ ॥ ॥ ॥ कालानीक्रियासासूत्रववनमितासागिवा मंगलाका सा
 जेरीसाचदुर्गारुगवतिवसूधामातृकावर्ममूला सावाक्षीवेषूवीसाग्रदगलनमितावीवजाक्ष
 उयाला सावेकानंकनूपाविविधगुणदयायागिनीर्णानमामि ॥ निखडु ॥ २३ ॥ ॥ शोमाकार
 खवर्णवर्णवर्णसात्रवामस्तितायार्ससूर्यसांकाटिनंजीवदृग्ग विज्येकमूडाकलापौ ॥ यस्येका

नं४

१५

दस

0 cms.

5

10

15

20

25

3

20

कम

कः ५

स्यदगाष्टवादिदधत४संलग्ननंतीकन साशीमावयदाकृजाऊयतिसानित्याघवानदिता ॥ २४ ॥ द
 कृदिदिमयस्यपावियवर्गुवागवखपाकृणी वडंगरुतथायवववदासंलग्ननंतीकन याख
 द्वाङ्गिगुलवापरुलकंकायेव्यद्यलेसुथा पाजेव्या रुयवामपाविससमासंलग्ननंतीकन ॥ २५ ॥
 ॥ यदवाधिरुजानूनासनवृषादवीयसिंदुस्किता सोम्यापायद्वनंमदरुयद्वनंसीसावकृदाउत्र
 ॥ धर्मार्थविक्रमामाकृपुर्वंगुरुयकानान्य सायपाहुकृलम्बव४कृलगुत्र४शीगकिनाथ४ २२
 गिव४ ॥ २६ ॥ ॥ आमात्रकाजिनंरास्तनरुवनमितामरुमागृगामी विष्वाहीवात्रुनरापृथ
 तत्रऊयनामखलावत्त। गारा। दवा। द्वेर्वसु। गरेर्वववकृसुमेर्वव्वे४कंगरावा साभशी
 कृत्तिकाख्याविनत्रुसतनंनानदिशोद्यमाद्य ॥ मूलथाय ॥ २७ ॥ कालयातकयातमउलग
 लिग्यालालमालविर्ग क॥ ६४ ॥ वक्षितकालकृठकृद्वनंकांलवनाधन। वकृन४ गिवशीसनेकनि

थ३

पूर्नरुम्बिदिमासासिर्न नंवन्यजगदकवन्दितयदंशी कंरुयालवदू ॥ २८ ॥ कृणागमाधिय
 र्णसकलजगतनूरेववाविश्वकफा जगजगत्सदृगा४सकलगुत्रववासेववव्वकृज४४। आ
 नन्दाविश्वना४ कववसगुतिर्नषादु। निर्नु। लस वृपातीत४सूत्रययिहगलसद्वितमुदिमिंरुया
 ले४ ॥ यागिन्व४ कामरूपा४ सकलगुलरुतसुफकार्कस्वराहा मकाककावमालागलेटगलनटीवकव
 मुकृवीयाः। लिंणीयागं कयालं सिनमयिवित्रीसस्मता४सूपसन्ना रुकानासाधकानामहिलिखितव
 नं। गुयमा४४४सन्ना४ ॥ वामू४४४वृपायुकटिनदगनाथावदंरुकावाला मोडानिम्भसिंदराकृति
 गनिखगिखाकालकणीजिनदी। देत्यानंमू४मालारुदिगलमलिकिष्वाकृतिरुविताग्नी खदाग्नीह
 रुकागुसकिममनिर्यं वव्विकायनसंका ॥ वामधत्वाधनगीसुविमलचकवसिन्धुवावीसुगारुय
 र्णवदुर्कपृथगगतकवसनवासिगकादिर्नव। संपाथकायदंसं सकलकृलगिविद्वि। लनकवली

कल्याणं नृपमानं पुनरुदरवर्गविश्ववन्द्यं गङ्गा ॥ परं वलिया ॥ ॥ यत्राङ्गवालवृषीकृत्तुनि
 रुतनाजाश्रमाताजयनी मध्याङ्गो रूपाविकसितवदनावा नृनृविमला । संश्रयायैवद्वय
 ललकृत्तुगमागङ्गातलुमाता नावन्ददविनित्यं निरुवर्गजननी पादुयागवृवीव ॥ २७ ॥
 ॐ ह्रदं वनमन्त्रि ॥ अङ्गनादि ॥ ॥ नृनृवर्ग ॥ ॐ नृयागिनीवकुमध्वस्तं मानमनुलव
 धिनी । नमामिगिरसानाथं रुतवैरुतवीधियं ॥ अयदानुद्वितानुधावान् समयावावर्तयना
 नृ । सर्वतश्च यथादनु दिशवकुसुमलकं ॥ १ ॥ संपूजकोनायपुपालकानी यतन्वियस्यामतया
 धनानी । दंगस्य गङ्गास्य पूरस्य गङ्गा ॥ कनादुगङ्गा नृगवानुकुलं ॥ २ ॥ नन्दनुगङ्गाधककुलान्य
 निमादिसिद्धा ॥ गङ्गाया ॥ यतनुसमयं विनियोगिनीनी । सागङ्गावृषीकृत्तुकापिनमाश्रवस्तु य
 स्यानुगङ्गावृषीकृत्तुमवदव ॥ ३ ॥ नेन्दुगङ्गाधका ॥ सिद्धा नन्दनुकुलयागिन ॥ नन्दनुसाधकाः

२३

अ
सु

वाय्यायवाय्याकुलदीपिका ॥ ४ ॥ दहिनं सखिनं सन्तु सखानिसन्तुदवगायसीदनुसदा न
 र्व वरणीजीवधविने ॥ ७ ॥ पीतधुतासनस्तु मदमृदिन मरुतैववामनुमूर्ति श्वलीवउसनाथ
 गङ्गापुत्रवदकालाकपाला ॥ रुणीनु ॥ यकावद्वृषीगङ्गावृषीकृत्तुसकलामागव ॥ दङ्गायालाया
 गिगङ्गायागयूकाजलवखववा ॥ यालमरुत्यवकु ॥ ७ ॥ यिवनुदवगा ॥ सर्वा वृद्धा ॥ एवविना
 यका ॥ यागिनी ॥ दङ्गायाला ॥ वीवचकुशवस्तिता ॥ १ ॥ ॐ नृनृवर्ग ॥ ॥ नृगादवागीवर्दि ॥ ॐ
 अश्वपूर्वगर्गपदं रुगवती वेगयत्रूपात्मका कानकावकुलान्ताहविद्वेगवक्त्रामवीविजय । रास्त
 रुतवर्गवर्कनृगर्गणीयागिनीयश्वर्क वन्दुकाग्निमवीविषटकमलमांयादुनित्यं कृङ्गी ॥ न
 ववलिविसर्जनं ॥ स्तनवलिविसर्जनं ॥ ॥ नृगावृषीकृत्तु ॥ दुकारेवायूवीजं तद्वयविवर्गवकुपा
 लीनद्वै कालवर्गकृत्तुगङ्गावृषीकृत्तुमवदव ॥ ३ ॥ नेन्दुगङ्गाधका ॥ सिद्धा नन्दनुकुलयागिन ॥ नन्दनुसाधकाः

यासः सूर्यसाका ३

सिन्धु नमूद विय ॥ कोमारी कोय ॥ उं कोमारी मयूना नूद ति ॥ उं श्री ३ कृत्तिका देवी सग नव नव कृष्ण चतुर्दशी

७ अ) क म भ ति को म नी या ग र्ज न वि (ओ) र्ज

१ अथादि॥ अस्मदादीनां श्रीमद्विष्णुवनाशी कृत्तिकादवीयस
नक्षत्राणां श्री ३ कृत्तिकादवीयूजा कर्तुं श्री कलमा र्क लुयाद्यानिमः॥